C-C-I M.A-Sem-I

B.A
1
1st
paper

भाषा की उत्पत्ति के प्रमुख सिद्धान्तों का वर्णन करें।

भाषा की उत्पत्ति से दो बातें अभिप्रेत है- भाषण अर्थात ध्वनन अर्थात बोलने की शक्ति की उत्पत्ति और दूसरा उच्चारित ध्वनि तथा अर्थ में परस्पर संसर्ग- स्थापना की क्षमता का आरम्भ जहाँ तक ध्वनि उत्पन्न करने का प्रश्न है वह अगणित पशु पक्षियों में पाया जाता है भाषा का अर्थ केवल भाषण लेने पर भाषा की उत्पत्ति का प्रश्न ही नहीं उठता, क्योंकि जब सृष्टि के अन्य जीवों में भाषण की शक्ति थी तो मनुष्य में भी वही रही होगी। उसकी शक्ति अकस्मात आविर्भाव नहीं होगा। तब भाषा की उत्पत्ति का अभिप्राय यही है कि ध्वनि के साथ अर्थ का संयोग करना।

भाषा की उत्पत्ति के निम्नलिखित प्रमुख सिद्धान्त है-

① दिव्योत्पत्ति सिद्धान्त - ईश्वरवादी प्रत्येक कार्य-कलाप का यहाँ तक कि सृष्टि का भी सम्बन्ध सूत्र किसी दिव्य शक्ति से जोड़ते हैं स्वभावत: भाषा की उत्पत्ति को भी लेकर उन्हें कोई उलझन नहीं है। जब ईश्वर मनुष्य को उत्पन्न कर सकता था तो उसकी भाषा को भी उत्पन्न कर सकता था। मनुष्य को विकसित-चेतना के साथ भाषिक क्षमता भी आयी और उसी से भाषा का आविर्भाव की कल्पना करता है। हिन्दू संस्कृत भाषा को देववाणी कहकर सारी भाषाओं की जननी घोषित करते हैं। अनीश्वरवादी बौद्ध और जैन भी पालि और अर्धमागधी को आदि भाषा मानते हैं। मंत्र उच्चारण में भी दिव्य उत्पत्ति होती है। महर्षि पाणिनि द्वारा उद्धृत चौदह प्रत्याहार सूत्रों को शिव के डमरुनिनाद से उत्पन्न मानना दिव्योत्पत्ति का ही रूपान्तर है।

② संकेत सिद्धान्त → कुछ विद्वानों का मत है कि आरम्भ में मनुष्य भी पशुओं के समान सिर, आँख, हाथ, पैर आदि अंगों को चलाकर अपना अपना अभिप्राय व्यक्त किया करता था, किन्तु इससे उसका अभिप्राय पूर्णत: व्यक्त नहीं हो पाता था। इन असुविधा को दूर करने और अपने वक्तव्य को पूर्णता और स्पष्टता से व्यक्त करने की भावना से प्रेरित होकर मनुष्य ने पारस्परिक विचार- विनमय द्वारा ध्वन्यात्मक भाषा को जन्म दिया, अर्थात आंगिक संकेत की असुविधा और अपूर्णता को मिटाने के लिए उनके राम-बात कर भाषा जैसे समर्थ पूर्ण और सुविधा जनक संकेत को प्रस्तुत किया है।

Scanned with CamScanner

③ रणन सिद्धान्त → इस सिद्धान्त की ओर सर्वप्रथम संकेत प्लेटो ने किया था किन्तु इसको पल्लवित किया मैक्समूलर ने। रणन सिद्धान्त के अनुसार शब्द एवं अर्थ में एक प्रकार का रहस्यात्मक नैसर्गिक सम्बन्ध है। संसार में प्रत्येक वस्तु की अपनी ध्वनि हुआ करती है जो किसी वस्तु से आहत होने पर व्यक्त हो जाती है। यदि हथौड़े से किसी धातु पर आघात करें तो उनसे विभिन्न प्रकार की ध्वनियाँ उत्पन्न होगी और उससे पहचान हो जाता है कि किस वस्तु से ध्वनियाँ निकली। तात्पर्य यह है कि प्रत्येक वस्तु की अपनी विशिष्ट ध्वनि होती है जो आघात पड़ने पर सुनाई देती है इसी ध्वनि को रणन सिद्धान्त ध्वनि कहते हैं।

④ आवेग सिद्धान्त → इस सिद्धान्त के अनुसार हर्ष, शोक, क्षोभ, क्रोध आदि मनोभावों की सहज अभिव्यक्ति से जो ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं उन्हीं से भाषा की उत्पत्ति हुई है संवेदन या भाव की तीव्रता होने पर आप से आप ध्वनि निकल पड़ती है जैसे हर्ष में वाह-वाह, अहा; शोक में आह ओह हाय, मनुष्य ऐसी ही ध्वनियों से अपने मनोभावों को व्यक्त करता था।

⑤ श्रमध्वनि सिद्धान्त → शारीरिक श्रम करते समय स्वभावतः श्वास-प्रश्वास की गति तीव्र हो जाती है जिसके परिणाम स्वरूप कुछ ध्वनियाँ अनायास निकलने लगती हैं जैसे कपड़ा धोते समय धोबी हिच्चो-हिच्चो या दिपो-दिपो बोलते रहता है। इसी प्रकार अनेक श्रम करते समय किसी न किसी प्रकार की ध्वनि के साथ अपना काम करते हैं। इस प्रकार श्रम ध्वनियाँ भी एक प्रकार से भाषा का उत्पत्ति करता है।

⑥ अनुकरण सिद्धान्त → इस सिद्धान्त के अनुसार वस्तुओं का नामकरण उससे उत्पन्न होनेवाली प्राकृतिक ध्वनियों के आधार पर हुआ है अर्थात जिस वस्तु से जैसी ध्वनि उत्पन्न उत्पन्न होती सुनी गयी उसका उसी से अनुकरण पर नाम रख दिया गया है जैसे – कू-कू कूकने वाली को कोकिल, झर-झर करने वाले जल प्रवाह को झरना कहा जाने लगा। यही अनुकरण सिद्धान्त है।

⑦ इंगित सिद्धान्त → इस सिद्धान्त के अनुसार मनुष्य ने अपने अंगों या आंगिक चेष्टाओं का ही वाणी द्वारा अनुकरण किया और उसी से भाषा की उत्पत्ति हुई। जैसे पानी पीते समय होठों के बार-बार सटने या खास खींचने से पा-पा जैसी ध्वनियाँ उत्पन्न हुई तो पा का अर्थ पीना मान लिया गया। इस तरह अनेक शब्दों का आरम्भ हुआ।

इस प्रकार हम निष्कर्ष के रूप में कह सकते हैं कि भाषा की उत्पत्ति में उपरोक्त सभी सिद्धान्त का आवश्यक योगदान है।

Scanned with CamScanner